

IV. मौद्रिक तथा चलनिधि स्थितियां

वृद्धि दर में कमी आने के जोखिम के बढ़ने एवं मुद्रास्फीति में गिरावट आने की संभावना को देखते हुए दिसंबर 2011 में मौद्रिक नीति दर में बढ़ोतरी को रोक रखा गया। मौद्रिक चक्र का भावी परिदृश्य वृद्धि-मुद्रास्फीति के बदलते आपसी संबंधों से निर्धारित होगा। 2011-12 की तीसरी तिमाही के दौरान ऋण में वृद्धि की दर में अंशतः गिरावट आई जो आर्थिक कार्यकलापों में आई गिरावट तथा अनर्जक आस्तियों के चक्र में किए गए पोर्टफोलियो समायोजन को दर्शाती है। मौद्रिक पक्ष में, बढ़ते मुद्रा गुणक ने आरक्षित मुद्रा के सृजन का स्तर कम रहने के बावजूद व्यापक मुद्रा की वृद्धि को उच्च स्तर पर बनाए रखा है। मुद्रा बाजार की रुपया चलनिधि कुछ हद तक कम हुई क्योंकि रिजर्व बैंक ने विनिमय दर के दबाव को कम करने के लिए डॉलरों की बिक्री की थी। रिजर्व बैंक ने चलनिधि की मांग को संतुलित करने के लिए एलएएफ के अंतर्गत रिपो सहित खुला बाजार परिचालन के जरिए चलनिधि डालकर इससे जुड़ी दबाव की स्थिति का मुकाबला किया।

वृद्धि को समर्थन देने के लिए मौद्रिक गुंजाइश उपलब्ध है, परंतु कार्रवाई की गति वृद्धि तथा मुद्रास्फीति के बदलते स्वरूप पर निर्भर करेगी

IV.1 2010 की शुरुआत से अपनाए गए मुद्रास्फीति-रोधी मौद्रिक रुझान को अक्टूबर 2011 तक जारी रखा गया क्योंकि वृद्धि की स्थिति

पर प्रतिकूल असर डाले बिना स्थिर मुद्रास्फीति प्रत्याशा सुनिश्चित करने की दुविधा के बीच रिजर्व बैंक ने सावधानीपूर्वक नीतिगत उपाय किए। रिवर्स रिपो से रिपो मोड में आ जाने के अनुरूप इस अवधि में नीति दरों में की गई कड़ाई का स्तर 525 आधार अंक था। इस नीतिगत रुझान को जारी रखते हुए रिजर्व बैंक ने अक्टूबर 2011 में रिपो दर को 25 आधार अंक बढ़ाकर 8.5 प्रतिशत कर दिया (सारणी IV.1)। तथापि, बाद में मुद्रास्फीति जहां अनुमानित पथ के अनुसार रही वहीं वैश्विक जोखिमों तथा घरेलू नीतिगत अनिश्चितताओं के कारण वृद्धि के कम होने का जोखिम बढ़ गया। परिणामस्वरूप, 16 दिसंबर 2011 की मध्य तिमाही समीक्षा में नीतिगत दरों को अपरिवर्तित रखा गया (चार्ट IV.1)।

IV.2 हाल के सप्ताहों में वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में काफी गिरावट आई। जहां मुद्रास्फीति में हाल में आई गिरावट से कुछ नीतिगत राहत मिल सकती है वहीं आगे की मौद्रिक कार्रवाई वृद्धि तथा मुद्रास्फीति के निरंतर बदलते आयामों पर निर्भर करेगी।

रुपया तथा डॉलर चलनिधि की स्थिति के जटिल होने से रिजर्व बैंक ने चलनिधि उपलब्ध कराई

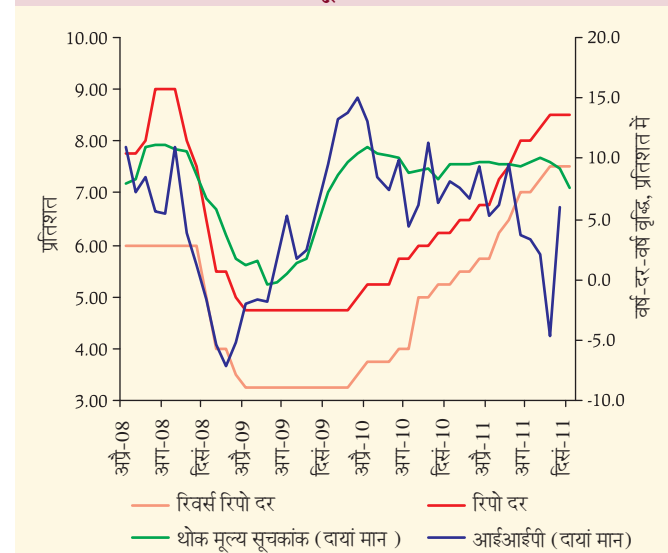
IV.3 रिजर्व बैंक के घोषित नीतिगत लक्ष्य के अनुरूप चलनिधि समायोजन सुविधा (एलएएफ) जून 2010 से अंतर्वेशन मोड में बनी रही। इस अवधि में मुद्रास्फीति-रोधी मौद्रिक नीतिगत रुझान

सारणी IV.1 : भारत के प्रमुख नीतिगत दरों में उतार-चढ़ाव - 2011-12

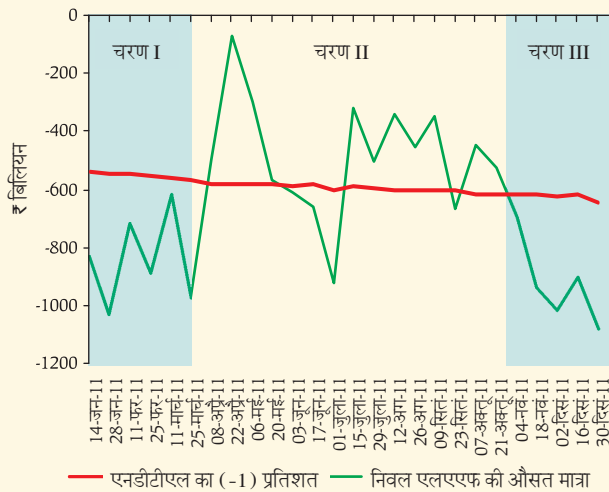
(प्रतिशत)		
प्रभावी होने की तारीख	रिपो दर	आरक्षित नकदी निधि अनुपात
1	2	3
3 मई, 2011	7.25 (+0.50)	6.00
16 जून, 2011	7.50 (+0.25)	6.00
26 जुला, 2011	8.00 (+0.50)	6.00
16 सितं, 2011	8.25 (+0.25)	6.00
25 अक्टू, 2011	8.50 (+0.25)	6.00
16 दिसं, 2011	8.50	6.00

टिप्पणी : 1. रिपो चलनिधि चलनिधि के अंतर्वेशन को दर्शाती है।
2. 2011-12 के नीतिगत वक्तव्य में की गई घोषणा के अनुसार रिवर्स रिपो दर रिपो दर से 100 आधार अंक नीचे और सीमांत स्थायी सुविधा (एमएसएफ) की ब्याज दर रिपो दर से 100 आधार अंक ऊपर निर्धारित होगी।
3. कोष्ठकों में दिये गये आंकड़े प्रतिशत अंकों में नीति दरों में परिवर्तन को दर्शाते हैं।

चार्ट IV.1: संकट से पूर्व और बाद दरों की स्थिति



चार्ट IV.2 : चलनिधि की स्थिति के विभिन्न चरण



टिप्पणी: ऋणात्मक एलएएफ की मात्रा चलनिधि के अंतर्वेशन को दर्शाती है।

को अपर्याप्त चलनिधि की स्थितियों से समर्थित किया गया। मौद्रिक अंतरण सामान्यतः अपर्याप्त चलनिधि की स्थिति में अधिक प्रभावी ढंग से कार्य करता है क्योंकि नीतिगत बदलाव से मुद्रा बाजार की दरें तत्काल प्रभावित हो जाती हैं। चलनिधि में कमी का स्तर पूरी अवधि में समान नहीं था क्योंकि चलनिधि को प्रभावित करने वाले कारक समय-समय पर बदलते रहे थे।

IV.4 वर्ष 2011 की चलनिधि की स्थिति को मोटे तौर पर तीन दौर में बांटा जा सकता है: पहला दौर जनवरी 2011 से मार्च 2011 के अंत तक का है जिसमें रिजर्व बैंक के पास सरकार की भारी मात्रा में नकदी शेष जैसे अस्थायी कारक तथा जमाराशि तथा क्रेडिट में वृद्धि एवं मुद्रा में प्रवृत्ति से अधिक की वृद्धि जैसे ढांचागत कारकों ने चलनिधि की स्थिति पर काफी अधिक दबाव बनाए रखा (चार्ट IV.2)।

IV.5 बाद में मार्च 2011 के अंत से अक्टूबर 2011 के मध्य तक के दूसरे दौर में चलनिधि के दबाव की स्थिति में बेहतर आई क्योंकि चलनिधि के ढांचागत तथा अस्थायी कारकों में नरमी आ गई थी (सारणी IV.2)। इस अवधि में चलनिधि समायोजन सुविधा के अंतर्गत औसत दैनिक अंतर्वेशन की राशि घटकर 476 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गई। उक्त अवधि में चलनिधि की कमी मोटे तौर पर रिजर्व बैंक के प्रत्याशित स्तर के अंदर रही। चलनिधि के दबाव में कमी आने के मुख्य कारकों में सरकार के नकदी शेष से आहरण तथा क्रेडिट तथा जमाराशि की वृद्धि दरों के बीच के अंतर का कम होना था।

IV.6 वर्तमान दौर में, जिसकी शुरुआत अक्टूबर 2011 के मध्य से होती है, अर्थोपाय अग्रिम/ ओवरड्राफ्ट के स्तर में कमी आने

सारणी IV.2: रिजर्व बैंक का चलनिधि प्रबंधन परिचालन

(₹ बिलियन में)

मद	चरण I	चरण II	चरण III
	31 दिसंबर 2010 से 31 मार्च 2011	31 मार्च 2011 से 21 अक्टूबर 2011	21 अक्टूबर 2011 से 25 नवंबर 2011
1	2	3	4
अ. चलनिधि के कारक (1+2+3+4)	736.4	-27.7	-286.1
1. प्राधिकृत व्यापारियों से भारतीय रिजर्व बैंक की निवल खरीद	0.0	-41.4	-170.2
2. जनता के पास मुद्रा	-455.3	-396.1	-188.2
3. क. रिजर्व बैंक के पास केंद्र का अधिशेष ख. अर्थोपाय अग्रिम और ओवरड्राफ्ट	-1,280.2	-328.4	375.5
4. अन्य (अवशिष्ट)	2,471.9	573.9	-352.2
आ. चलनिधि का प्रबंधन (5+6+7+8)	157.7	-216.7	296.8
5. एलएएफ का चलनिधि प्रभाव	-74.1	-262.4	189.9
6. ओएमओ (निवल) का चलनिधि प्रभाव	231.8	45.7	106.9
7. एमएसएस का चलनिधि प्रभाव	0.0	0.0	0.0
8. सीआरआर में परिवर्तन के पहले दौर का प्रभाव	0.0	0.0	0.0
ग. बैंक रिजर्व # (अ+आ)	894.1	-244.5	10.7

(+) बैंकिंग प्रणाली में चलनिधि का अंतर्वेशन

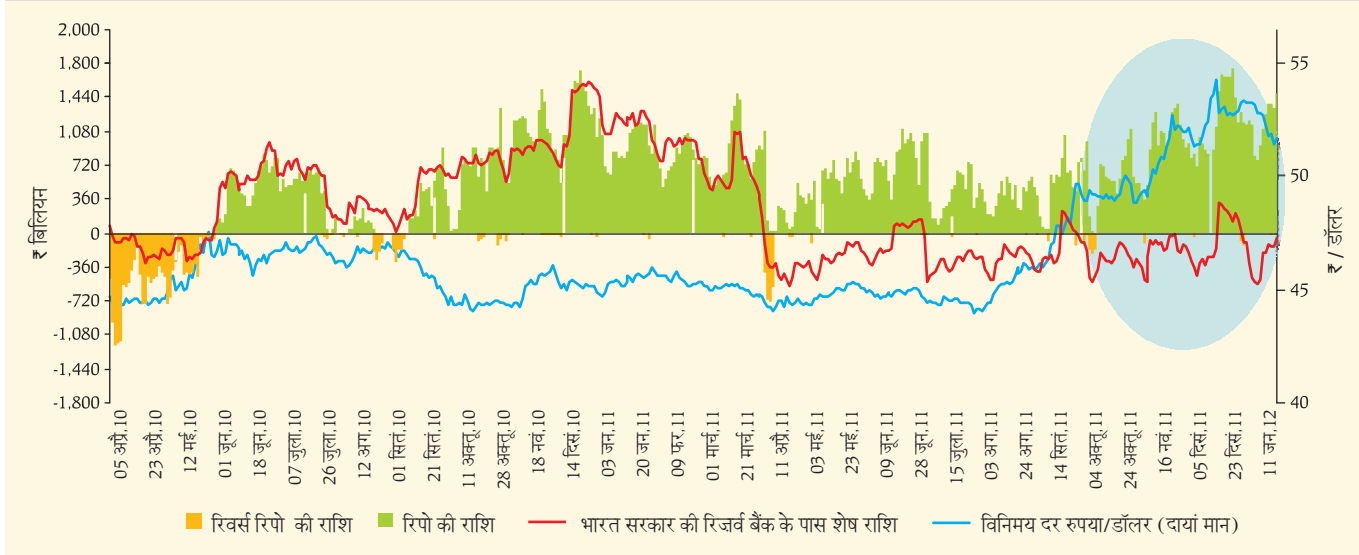
(-) बैंकिंग प्रणाली से चलनिधि का अवशोषण

#: इसमें बैंकों के वॉल्ट में रखी नकद राशि शामिल है और इसे सीआरआर में होने वाले परिवर्तन के कारण पहले दौर में होने वाले के प्रभाव का समायोजन किया गया है।

तथा रिजर्व बैंक द्वारा विदेशी मुद्रा बाजार परिचालन किए जाने से चलनिधि पर फिर से दबाव की स्थिति बन गई (चार्ट IV.3)। मौद्रिक नीति के रुझान के अनुरूप तथा वर्तमान एवं आगे की चलनिधि की स्थितियों के आकलन के आधार पर रिजर्व बैंक ने चलनिधि के दबाव को कम करने के लिए कई उपाय किए। इनमें खुला बाजार खरीद, 16 दिसंबर 2011 को अतिरिक्त रिपो का परिचालन तथा अतिरिक्त एसएलआर धारिताओं पर सीमांत स्थायी सुविधा का दिया जाना शामिल है। चलनिधि पर दबाव जनवरी में अब तक बना हुआ है। चालू वित्तीय वर्ष के दौरान खुला बाजार परिचालनों के अंतर्गत 16 जनवरी 2012 तक 614 बिलियन रुपये तक की चलनिधि डाली जा चुकी है। दिसंबर 2011 तथा जनवरी 2012 के दौरान कुछ बैंकों ने सीमांत स्थायी सुविधा का भी लाभ उठाया है।

IV.7 नवंबर 2011 से घरेलू चलनिधि की कमी बैंक की सहज स्थिति अर्थात् एनडीटीएल के 1 प्रतिशत के दायरे से काफी अधिक बनी हुई है। तीसरे दौर में चलनिधि की कमी मोटे तौर पर इस दायरे से अधिक होने के बावजूद मई 2011 में शुरू की गई नई परिचालन प्रक्रिया ने

चार्ट IV.3 : एलएफ की मात्रा



मुद्रा बाजार के दबाव को रोकने में मदद की। अल्पावधि की दरों में उतार-चढ़ाव कम रहा तथा ये रिजर्व रिपो दर तथा एमएसएफ दर द्वारा निर्धारित दायरे के अंदर रहीं। चलनिधि में असंतुलन की पिछली अवधियों में अल्पावधि दरों में काफी अधिक वृद्धि देखी गई थी। मुद्रास्फीति-रोधी नीतिगत लक्ष्यों अथवा विदेशी मुद्रा बाजार में स्ट्रेबाजी की पोजिशनों के निधीयन के साथ समझौता किये बिना रिजर्व बैंक द्वारा समय पर की गई नीतिगत कार्रवाई ने भी अल्पावधि दरों पर पड़ने वाले दबावों को कम करने में मदद की। आगे चलनिधि की कमी की स्थिति का समाधान सतर्कतापूर्वक करना होगा।

IV.8 वर्तमान में बैंकिंग प्रणाली द्वारा सरकारी प्रतिभूतियों की धारिता एनडीटीएल का लगभग 29 प्रतिशत है जो कि सांविधिक जरूरत से लगभग पांच प्रतिशत अंक अधिक है। यह स्थिति चलनिधि के अंतर्वेशन के लिए तुलनात्मक दृष्टि से काफी अधिक गुंजाइश उपलब्ध कराती है। इस प्रयोजन हेतु खुला बाजार परिचालन सबसे पहली पसंद वाली लिखत रही है, परंतु आवश्यकतानुसार अतिरिक्त लिखतों के बारे में विचार किया जा सकता है।

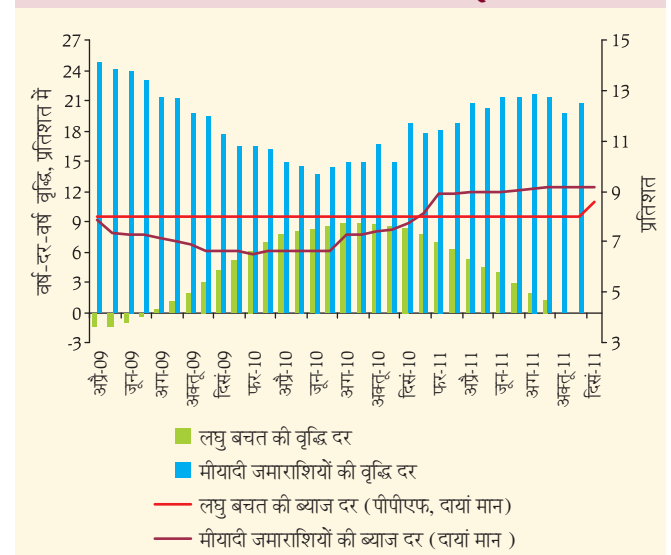
मुद्रा के विस्तार में कमी आई परंतु ब्याज दर चक्र के कारण जमाराशि में वृद्धि हुई

IV.9 मुद्रा में वृद्धि की दर, जिसमें मुद्रास्फीति के दबावों के साथ-साथ 2010-11 में आर्थिक वृद्धि में तेज सुधार के चलते भारी बढ़ोतरी हुई, 2011-12 में अब तक कम होती रही है। मुद्रा की वृद्धि दर में गिरावट के लिए जमाराशियों पर ब्याज दरों के बढ़ने के चलते मुद्रा को रखने की उच्च लागत के प्रति आर्थिक एजेंटों के

व्यवहार को कारण के रूप में गिनाया जा सकता है। यह देखा गया है कि चालू वित्तीय वर्ष में अब तक मुद्रा को मीयादी जमाराशियों में रूपांतरित किया जाता रहा है।

IV.10 ब्याज दरों में लगातार की गई वृद्धि के चलते दिसंबर 2010 से मीयादी जमाराशियों में अच्छी वृद्धि हो रही है (चार्ट IV.4)। इसी के अनुरूप मुद्रा की वृद्धि दर में गिरावट देखी गई, साथ ही मांग जमाराशियों की वृद्धि दर में भारी कमी आई। रिजर्व बैंक द्वारा हाल की अवधि में ब्याज दरों के क्षेत्र में प्रमुख सुधारों की शुरुआत की गई है। 25 अक्टूबर 2011 से रिजर्व बैंक ने बचत बैंक खातों की ब्याज दरों पर से नियंत्रण समाप्त कर दिया है। इस कार्रवाई से मौद्रिक नीति

चार्ट IV.4: जमाराशियों की प्रवृत्ति



के अंतरण में सुधार होने के साथ-साथ यह भी आशा है कि बचत जमा खातों की ब्याज दरें बाजार की बदलती स्थितियों के अनुसार बदलती रहेंगी।

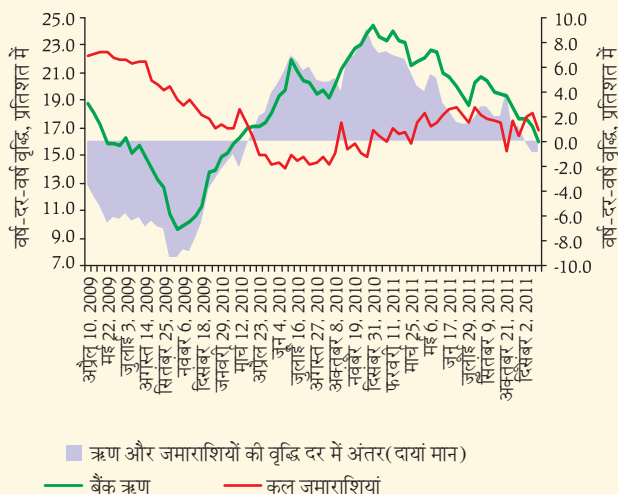
चक्रिय स्थितियों के चलते क्रेडिट में गिरावट आई

IV.11 खाद्येतर ऋण की वृद्धि दर में दिसंबर 2010 से सामान्यतः गिरावट की प्रवृत्ति देखी गई है। हाल के समय में इसमें जो गिरावट आई वह आर्थिक कार्यकलापों में सामान्य गिरावट तथा बैंकों की कुछ हद तक जोखिम विमुखता के साथ-साथ अब तक की गई मौद्रिक कार्रवाई के समग्र असर को दर्शाती है।

IV.12 2010-11 की पहली तीन तिमाहियों में क्रेडिट तथा जमाराशियों की वृद्धि दरों में अंतर काफी अधिक होने के साथ-साथ वह बढ़ भी रहा था, परंतु उसके बाद इस अंतर में क्रमशः कमी आई (चार्ट IV.5)।

IV.13 बैंक समूह के व्यापक स्तर पर, क्रेडिट की वृद्धि दर में गिरावट सरकारी क्षेत्र के बैंकों में विशेष रूप से अधिक थी। इससे इन बैंकों की बढ़ती जोखिम विमुखता परिलक्षित होती है जिसके चलते बड़ी मात्रा में सरकारी उधारियों की पृष्ठभूमि में जोखिम-मुक्त सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश के रूप में पोर्टफोलियो में बदलाव आया। बकाया क्रेडिट की दृष्टि से सरकारी क्षेत्र के बैंक सबसे बड़े उधारदाता होने के कारण उनके क्रेडिट की वृद्धि दर में गिरावट आने से सभी अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के समग्र ऋण विस्तार के स्तर में गिरावट आती है। विदेशी बैंकों में क्रेडिट की वृद्धि में अक्टूबर 2008 से अक्टूबर 2009 के दौरान तेज

चार्ट IV.5 : ऋण और जमाराशियों की वृद्धि दर में अंतर



सारणी IV.3 : अनुसूचित वाणिज्य बैंकों द्वारा प्रदत्त ऋण

(राशि ₹ बिलियन में)

मद	30 दिसंबर 2011 को बकाया	घट-बढ़ (वर्ष-दर-वर्ष)			
		31 दिसंबर 2010		30 दिसंबर 2011	
		राशि	प्रतिशत	राशि	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6
1. सरकारी क्षेत्र के बैंक*	32,129	5,418	24.1	4,190	15.0
2. विदेशी बैंक	2,300	315	19.8	392	20.6
3. निजी बैंक	8,166	1,515	28.2	1,274	18.5
4. सभी अनुसूचित वाणिज्य बैंक	43,656	7,408	24.5	6,003	15.9

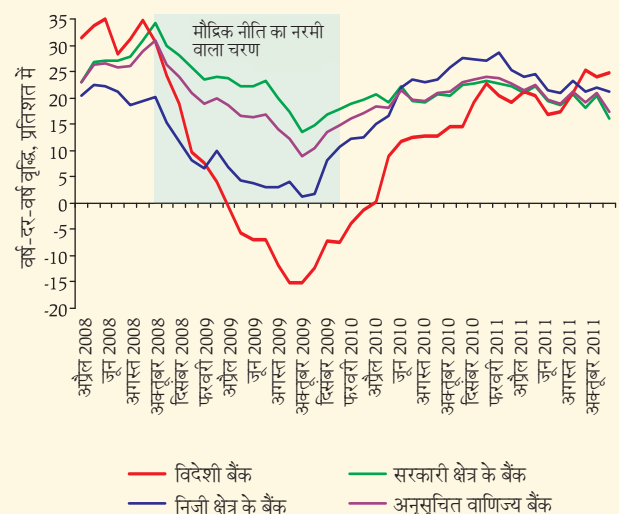
टिप्पणी: 1. 30 दिसंबर 2011 के आंकड़े अंतिम हैं।

2. * क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को छोड़कर।

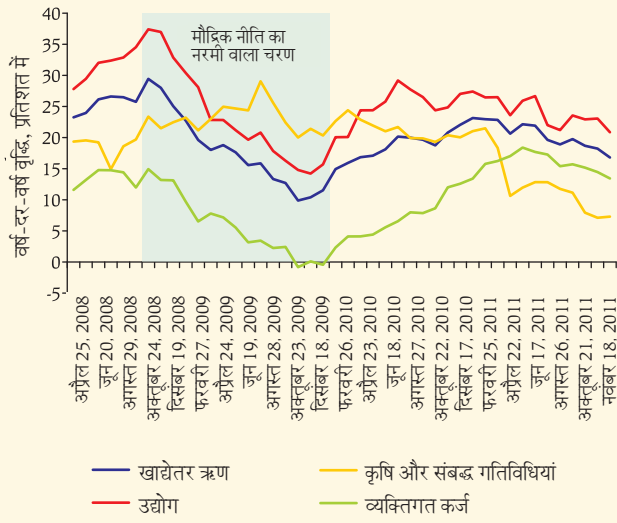
गिरावट आई थी परंतु उसके बाद स्थिति में सुधार देखा गया। निजी क्षेत्र के बैंकों में संकट के बाद की अवधि में क्रेडिट का विस्तार सुदृढ़ था, परंतु हाल की अवधि में इसमें गिरावट देखी गई है (सारणी IV.3 तथा चार्ट IV.6)।

IV.14 खाद्येतर वस्तुओं के क्रेडिट की वृद्धि में दिसंबर 2010 से गिरावट आई, जो उद्योग, व्यक्तिगत ऋण, सेवाओं और विशेष रूप से कृषि सहित सभी क्षेत्रों में आई, गिरावट के कारण थी (चार्ट IV.7)। कृषि के क्षेत्र में गिरावट का मुख्य कारण फरवरी-मार्च 2011 के दौरान परिभाषा में किया गया परिवर्तन था। कृषि क्षेत्र में जो गिरावट आई उसमें संभवतः अनर्जक आस्तियों में हुई भारी वृद्धि की भूमिका थी (चार्ट IV.8)।

चार्ट IV.6 : बैंक समूह-वार ऋण में वृद्धि



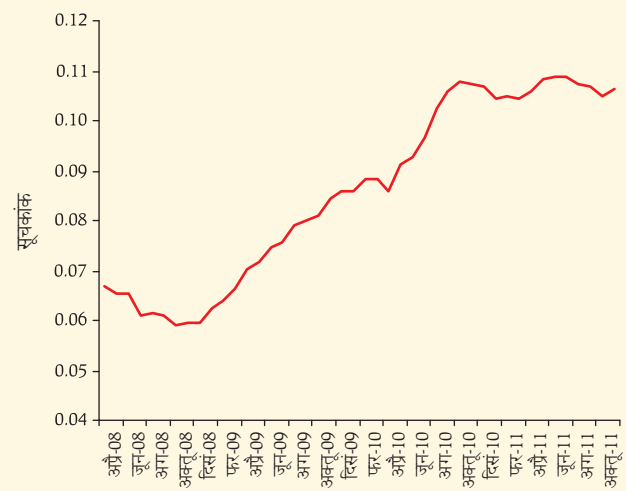
चार्ट IV.7 : ऋण में क्षेत्र-वार वृद्धि



IV.15 पिछले दो वर्षों के दौरान सकल अनर्जक आस्तियों में वृद्धि की दर काफी अधिक थी, यहां तक की सुदृढ़ आर्थिक वृद्धि की अवधि में भी यह दर अधिक थी। जहां अनर्जक आस्तियों का उच्च स्तर अंशतः रिपोर्टिंग की बेहतर प्रणाली के कार्यान्वयन को दर्शाता है वहीं यह उच्च स्तर चिंता का विषय भी है।

IV.16 19 औद्योगिक समूहों में ऋण के प्रवाह का नार्मलाइज्ड हारफिंडल सूचकांक का उपयोग करके किए गए विश्लेषण से पता चलता है कि औद्योगिक क्रेडिट के संकेंद्रण में अवधि के दौरान वृद्धि हुई (चार्ट IV.9)। परंतु अच्छी बात यह है कि सूचकांक का वर्तमान

चार्ट IV.9 : औद्योगिक ऋण का नार्मलाइज्ड हारफिंडल सूचकांक

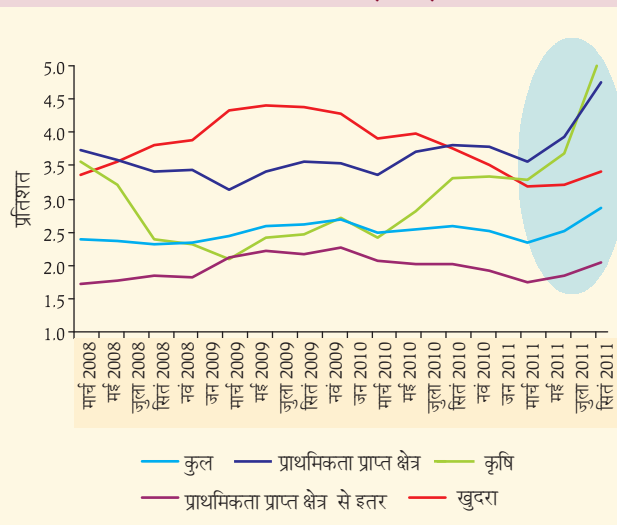


स्तर केवल कम से सामान्य संकेंद्रण की ओर अंतरण को दर्शाता है तथा उस स्तर तक किसी क्षेत्र विशेष के आघातों के प्रति बैंकों की संवेदनशीलता सीमित है।

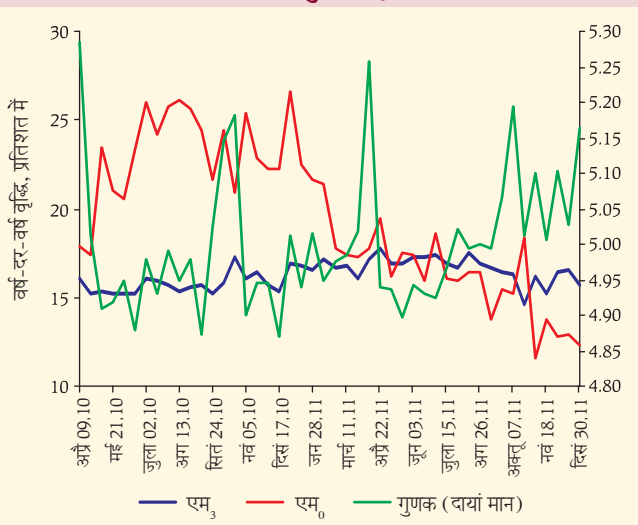
प्राथमिक मुद्रा के सृजन का स्तर कम रहने के बावजूद बढ़ते मुद्रा गुणक ने मौद्रिक विस्तार को बनाए रखा

IV.17 आरक्षित मुद्रा में आई कमी मुद्रा की मांग में गिरावट आने की वजह से थी। आरक्षित मुद्रा की वृद्धि दर में तेज गिरावट आने के बावजूद व्यापक मुद्रा आपूर्ति की वृद्धि दर मुख्यतः रिजर्व बैंक के

चार्ट IV.8 : एससीबी के सकल अग्रिमों के प्रतिशत के रूप में क्षेत्र-वार सकल एनपीए



चार्ट IV.10 : व्यापक मुद्रा में वृद्धि की तुलना में आधार मुद्रा में वृद्धि



सारणी IV.4 : मौद्रिक संकेतक

मद	बकाया राशि (बिलियन ₹) 30 दिसंबर 2011	वित्तीय वर्ष में घट-बढ़ (प्रतिशत)		वर्ष-दर-वर्ष घट-बढ़ (प्रतिशत)	
		2010-11	2011-12	31 दिसं., 10	30 दिसं., 11
1	2	3	4	5	6
रिज़र्व मुद्रा (एम ₀)*	14,200.5	8.7	3.1	22.5	13.0
व्यापक मुद्रा (एम ₃)	71,986.8	11.1	10.8	16.9	15.6
एम₃ के प्रमुख घटक					
जनता के पास मुद्रा	9,779.9	13.2	7.0	19.1	12.6
कुल जमाराशियां	62,184.0	10.8	11.4	16.6	16.2
जिसमें से: मांग जमाराशियां	7,093.9	0.2	-1.2	13.5	-1.4
मीयादी जमाराशियां	55,090.1	12.6	13.3	17.1	18.9
एम₃ के प्रमुख स्रोत					
सरकार को निवल बैंक ऋण	22,351.1	7.7	12.7	17.3	24.4
वाणिज्यिक क्षेत्र को बैंक ऋण	46,817.9	16.0	10.5	23.9	15.6
बैंकिंग क्षेत्र की निवल विदेशी आस्तियां	15,905.6	5.3	14.2	1.0	17.9

टिप्पणी: 1. आंकड़े अर्न्ततम हैं।
2. * आंकड़े 13 जनवरी 2011 के हैं।

संकेतात्मक पथ से ऊपर रही (चार्ट IV.10)। यह मुख्यतः मुद्रा गुणक में तेज वृद्धि होने की वजह से है तथा यह चलनिधि के प्रावधान एवं मुद्रास्फीति को रोकने के लिए उसपर नियंत्रण रखने के बीच बारीक संतुलन रखने की जरूरत को दर्शाता है। 2011-12 की तीसरी तिमाही में मुद्रा की आपूर्ति में जो वृद्धि हुई वह मुख्यतः घटक पक्ष में

सावधि जमाराशियों में हुई वृद्धि की वजह से थी (सारणी IV.4)। मीयादी जमाराशियों में हुई वृद्धि नकदी अथवा मांग जमाराशियों को रखने की बढ़ती अवसर लागत की वजह से थी क्योंकि मीयादी जमाराशियों की ब्याज दरों में रिज़र्व बैंक के मुद्रास्फीति-रोधी मौद्रिक नीतिगत रुझान के अनुसार बदलाव हुआ। संसाधन पक्ष में व्यापक

सारणी IV.5 : वित्तीय संसाधनों का वाणिज्यिक क्षेत्र में प्रवाह

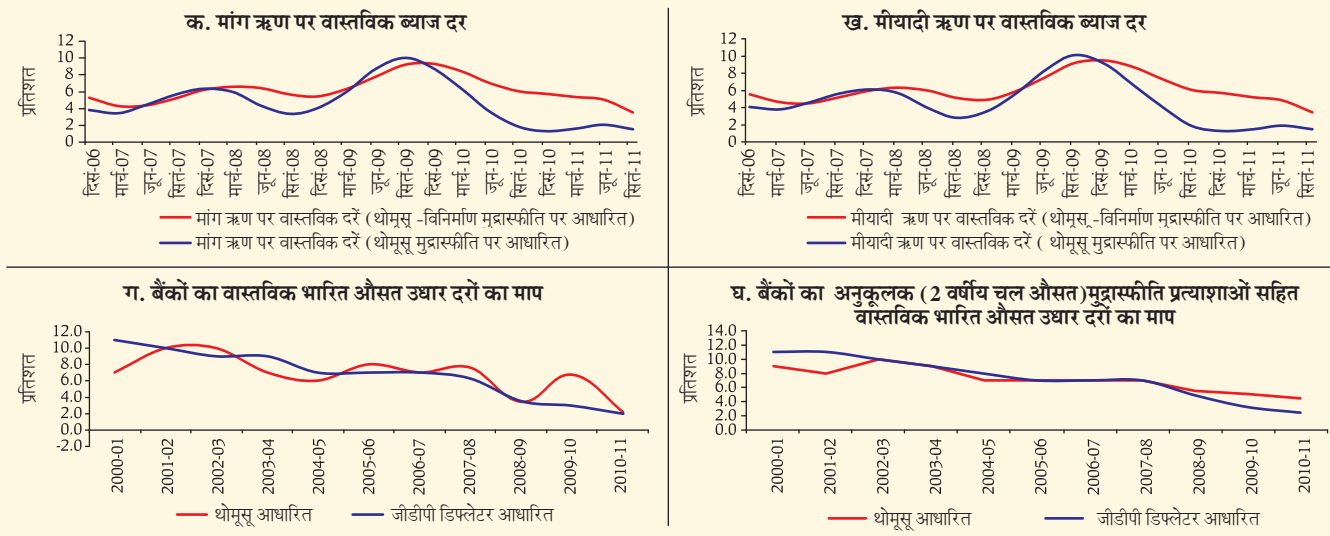
(बिलियन ₹)

मद	अप्रैल-मार्च		अप्रैल-दिसंबर	
	2009-10	2010-11	2010-11	2011-12
1	2	3	4	5
अ. समायोजित खाद्येतर बैंक ऋण (एनएफसी)	4,786	7,110	5,391	4,253
i) खाद्येतर ऋण	4,670	6,815	5,031	4,033
जिसमें से: पेट्रोलियम और उर्वरक ऋण	100	-242	-231	6.63 ^
एससीबी द्वारा गैर-एसएलआर निवेश	117	295	359	220
आ. गैर बैंकों से ऋण प्रवाह (आ1+आ2)	5,850	5,286	4,064	4,972
आ 1. देशी स्रोत	3,652	2,956	2,257	2,539
1. वित्तेतर संस्थाओं द्वारा सार्वजनिक निर्गम	320	285	232	62
2. वित्तेतर संस्थाओं द्वारा सकल निजी स्थानन	1,420	674	393	327 *अ
3. बैंक से इतर द्वारा अभिदान किए गए वाणिज्यिक पत्रों का निवल निर्गम	261	172	369	867 %
4. आवास वित्त कंपनियों द्वारा निवल ऋण	285	384	229	248 ^
5. रिज़र्व बैंक द्वारा विनियमित 4 अखिल भारतीय वित्तीय संस्थाओं-नाबार्ड, एनएचबी, सिडबी और एक्विजम बैंक-द्वारा प्रदत्त सकल सहायता	338	400	323	216
6. प्रणालीगत रूप से महत्त्वपूर्ण जमाराशियां न लेने वाली एनबीएफसी (बैंक ऋण घटाकर)	607	679	515	611 ^
7. एलआईसी का कारपोरेट ऋण, बुनियादी ढांचा तथा सामाजिक क्षेत्र में निवल निवेश	422	361	196	210
आ 2. विदेशी स्रोत	2,198	2,330	1,806	2,433
1. बाह्य वाणिज्यिक उधार / एफसीसीबी	120	555	434	608
2. एडीआर / जोडीआर निर्गम, बैंकों और वित्तीय संस्थाओं को छोड़कर	151	92	83	26
3. विदेश से अल्पावधि ऋण	349	502	319	269 *
4. भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश	1,578	1,181	970	1,530 ^
इ. संसाधनों का कुल प्रवाह (अ+आ)	10,636	12,396	9,454	9,225
ज्ञापन मंदे:				
म्यूच्युअल फंडों द्वारा ऋण (गिल्ट से इतर)के माध्यम से जुटाए गए निवल संसाधन	966	-367	-300	-54

* : सितंबर 2011 तक ^ : नवंबर 2011 तक % : 15 नवंबर 2011 तक अ : अर्न्ततम

टिप्पणी: एफडीआई के आंकड़ों में अप्रैल-नवंबर के दौरान निगमित और अनिगमित इकाइयों की इक्विटी पूंजी तथा पुनर्निवेशित आय शामिल है और उसमें शामिल अन्य पूंजी अप्रैल-सितंबर के दौरान की है।

चार्ट IV.11: मांग ऋण तथा मीयादी ऋण पर वास्तविक ब्याज दर



मुद्रा आपूर्ति में जो वृद्धि हुई वह सरकारी क्षेत्र को रिजर्व बैंक द्वारा दिए गए निवल क्रेडिट में हुई वृद्धि की वजह से थी जो रिजर्व बैंक के खुला बाजार परिचालन एवं चलनिधि समायोजन सुविधा परिचालन को दर्शाती है।

वाणिज्यिक क्षेत्रों में संसाधनों के प्रवाह में गैर-बैंक स्रोतों का प्राधान्य बना हुआ है

IV.18 वित्त के समग्र स्रोतों में अप्रैल-दिसंबर 2010 में गैर-बैंक स्रोतों का हिस्सा 43.0 प्रतिशत था जो इस समय 53.9 प्रतिशत हिस्से के साथ वित्त का प्रमुख स्रोत है। घरेलू वित्तपोषण के अंतर्गत, गैर-वित्तीय संस्थाओं के सार्वजनिक निर्गमों की संख्या में काफी कमी आई जो शेयर बाजारों में नरमी के रुख को दर्शाता है (सारणी IV.5)।

वास्तविक ब्याज दर कम बनी हुई है

IV.19 हाल की अवधि में मौद्रिक कड़ाई के बावजूद वास्तविक उधार दरें कम रही हैं जो उच्च मुद्रास्फीति को दर्शाती हैं

(चार्ट IV.11)। कम परंतु धनात्मक ब्याज दरों ने मुद्रास्फीति-रोधी रुझान को कार्य करने के लिए आधार प्रदान किया, साथ ही वृद्धि दर की गिरावट को कम करने में भी मदद की।

बिगड़ती समष्टि-अर्थव्यवस्था से मौद्रिक नीति को भारी चुनौती

IV.20 वृद्धि दर में गिरावट के स्पष्ट संकेत मिलने पर नीति दरों में बढ़ोतरी पर विराम लगाया गया। खाद्य मुद्रास्फीति की दर ऋणात्मक हो गई जोकि मुख्यतः उच्च आधार एवं सब्जियों की कीमतों में मौसमी गिरावट की वजह से थी। नीति दर संबंधी आगे के मुख्य कारकों में मूल मुद्रास्फीति तथा विनिमय दर के अंतरण की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। साथ ही, चलनिधि की कमी को स्वीकार्य सीमा तक रखना सुनिश्चित करके अन्य बाजारों के कार्यकलापों को सुगम बनाना भी एक नीतिगत प्राथमिकता है। निकट भविष्य में मौद्रिक नीतिगत रुझान के लिए विभिन्न विचारणीय विषयों पर संतुलन बनाए रखना होगा।